आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 22 | उदयपुर मंगलवार 01 दिसंबर 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोक में वाचिक परम्परा का आलोक

- रामनारायण उपाध्याय -

वाचिक परम्परा में लोकगीतों की संख्या अधिक रही है। आदमी ने जो कुछ किया, उसका लेखाजोखा तो इतिहास में आ जाता है लेकिन अपने मनोजगत में उसने जो कुछ भी सोचा, विचारा, रंगीन कल्पनाएं कीं, सुन्दर सपने संजोये उन सबका विवरण इन लोककथाओं में सुरक्षित है। लोक-कहावतों को यदि सामाजिक न्याय की चलती-फिरती अदालतें कहें तो भी अत्युक्ति नहीं होगी। किसी बड़े से बड़े विवाद का कम से कम समय और शब्दों में अचूक निर्णय देने की इनमें अद्‌भुत क्षमता होती है। दलीलें और उपदेश भी जहां हार जाते हैं, वहां कहावतें अपना रंग जमाती आई हैं। ये शिलाओं पर अंकित राज-आज्ञाएं नहीं हैं पर ओंठ पर चलते हुए शताब्दियों के ओर-छोर नापती आई हैं। ये विचारों के ऐसे तिनके हैं जो डूबते को उभारने का सहारा देते हैं। ज्ञान के ऐसे सिक्के हैं जो सब देशों और सब कालों में समान रूप से चलते आये हैं।

हमारा सम्पूर्ण लोकसाहित्य वाचिक परम्परा की ही देन है। यही क्यों हमारा हिन्दी साहित्य भी पहले श्रुति याने सुन कर, जो स्मृति याने याददाश्त के आधार पर एक जुबान पर तैरते हुए और फिर वेदोक्त और पुराणोक्त रूप में लिखकर आगे बढ़ा है।

वाचिक परम्परा को मुख्यत: चार भागों में विभक्त किया जा सकता है- (1) लोकगीत (2) लोककथा (3) लोकनाट्य (4) लोकोक्तियां।

गीत साहित्य में भजन, गेय कथानक और तुकबन्दियां प्रचलित रही हैं। अगीत साहित्य में लोककथा, लोकनाट्य एवं लोकोक्तियां प्रमुख हैं। लोककथाएं चार भागों में प्रचलित रही हैं- (1) बच्चों की मनोरंजन कथाएं (2) व्रत की वार्ताएं (3) नीति कथाएं (4) रंगीन रूपक।

लोक-प्रहसनों में ख्याल, स्वांग तथा रास मण्डलों में प्रहसन अपनी रोचकता से सबका मन मोहते आये हैं। लोकोक्ति साहित्य में कहावतें और पहेलियां सम्मिलित हैं। कहावतों में खेती की, नीति की, सामाजिक एवं सुन्दर साहित्यिक कहावतें सदियों से मनुष्य की जुबान पर तैरती आई हैं। पहेलियों में बूझने वाली पहेलियां एवं मनोरंजक चुटकले रोचकता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं।

वाचिक परम्परा में लोकगीतों की संख्या अधिक रही है। गीत मनुष्य का स्वभाव रहा है। इन गीतों की अंगुली पकड़ कर ही मनुष्य ने युग-युगान्त की यात्रा की है। किसान जब खेत जोतता है तो गीत के साथ। मजदूर जब धरती पर कुदाली चलाता है तो गीत के साथ। स्त्री जब चक्की चलाती है गो गाती है- 'मैंने आटे के साथ समूचे अंधेरे को पीस डाला। सुबह कब होगी।'

संस्कार के गीत मुख्यत: दो रूपों में सबसे अधिक प्रचलित हैं- (1) जन्म के गीत (2) विवाह के गीत। जन्म के गीतों में एक ओर यदि जच्चा की प्रसव पीड़ा की व्यथा, प्यार और प्रणय की कथा संजोई होती है तो दूसरी ओर देवी-देवताओं की मनौतियां, नामकरण संस्कार और छठी पूजा के गीतों के साथ ही जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है, उसके मुण्डन एवं यज्ञोपवित आदि के गीत जुड़ते जाते हैं। विवाह के गीतों में कन्या की सगाई-मुहूर्त, गणेश पूजन, हरिद्रा लेपन एवं बना-बनी के सरस सुहावने गीत गाये जाते हैं तो मण्डप, पूर्वजों की स्मृति, भाई-बहनों के स्नेह एवं कन्या की विदाई से सम्बन्धित करुणा को भुलाया नहीं सकता। बारात के घर पहुंचने पर नव दम्पति के स्वागत, गौना, सुहागरात, सन्तान की आकांक्षा और बन्ध्या की व्यथा के गीत भी इस कड़ी को आगे बढ़ाते चलते हैं।

व्रत, उत्सव और त्यौहार गीतों में रक्षाबन्धन, होली, बहुला गाय की कथा एवं गणगौर के गीत अपने माधुर्य के लिए प्रसिद्ध हैं। देवी-देवताओं और तीर्थों के गीतों में रामकृष्ण की मधुर लीलाएं, ओंकारेश्वर एवं चारों धाम की महिमा तथा लहरों की तरह तरंगायमान गंगा के गीतों में सबका मन निर्मल करने की क्षमता है।

ऋतु सम्बन्धी गीतों में सावन के गीत, मेहंदी के गीत, झूले के गीत, बारह मासे के गीत तथा प्रभात एवं संध्या के गीत प्रत्येक व्यक्ति के मन को मोहते आये हैं।

छोटे बच्चों के गीतों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- (1) बच्चों के लिए गीत (2) बच्चों के द्वारा गाये जाने वाले गीत। बच्चों के लिए गीतों में उन्हें खिलाने एवं सुलाने से सम्बन्धित चन्दा मामा के गीतों की अपनी शान है। बच्चों के द्वारा गाये जाने वाले गीतों में लड़कों के बकेड़ी एवं मेंढ़क के गीत तथा लड़कियों के गीतों में फूलपाती, सांझी, नरवत और गर्भा के नृत्य-गीत अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। लोकगाथाओं में वर्षा की सुहावनी ऋतु में भीलटदेव की 'मथवाड़' नामक लम्बी गाथाएं रात-रात भर चलती रही हैं।

अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा शिव-पार्वती की महिमा को लेकर काठी नृत्य के साथ पूरे पन्द्रह दिन तक चलने वाली नृत्यात्मक लोकगाथाएं सबका मन मोह लेने की क्षमता रखती हैं।

वाचिक परम्परा में लोकगीतों के बाद दूसरा स्थान लोककथाओ का है। आदमी ने जो कुछ किया, उसका लेखाजोखा तो इतिहास में आ जाता है लेकिन अपने मनोजगत में उसने जो कुछ भी सोचा, विचारा, रंगीन कल्पनाएं बनीं, सुन्दर सपने संजोये उन सबका विवरण इन लोककथाओं में सुरक्षित है।

लोककथाएं सदियों से मनुष्य का मनोरंजन करते आई हैं। इनमें कुछ भी असम्भव नहीं होता। इसमें सिंह और सर्प भी दोस्ती निभाते, पक्षी सन्देश पहुंचाते और जरूरत पड़ने पर भित्तिचित्र भी बालने लगते हैं। मनुष्य इच्छा मात्र से सात समुन्दर को लांघता, नवखण्ड पृथ्वी की परिक्रमा करता और किसी द्वीप की ऐसी अनिंद्य सुन्दरी से शादी रचाता है जिसके समक्ष स्वर्ग की अप्सराएं और पाताल की नाग कन्याएं भी पानी भरती हैं।

इनके दो रूप रहे हैं - (1) पुरुषों के द्वारा कही जाने वाली लोककथाएं (2) स्त्रियों द्वारा कही जाने वाली व्रत वार्ताएं। मनुष्य में बचपन से ही वार्ताएं सुनने की अद्‌भुत रूचि रही है। सांझ होते ही बच्चे मां के नजदीक घिर आते हैं और वार्ता सुनाने के लिए जिद करने लगते हैं। जब तक वार्ता चलती रहती है वे उसमें बड़ी गंभीरता से दिलचस्पी लेते, बीच-बीच में 'हुंकारे' से अपनी स्वीकृति प्रकट करते हैं। कभी-कभी कुछ अजीबोगरीब प्रश्न करते और एक वार्ता के समाप्त होने पर पुन: दूसरी सुनाने के लिए अड़ी करने लगते हैं।

बड़े होने पर ये ही कथाएं रोचक एवं रंगीन रूपक का बाना धारण कर आगे बढ़ती हैं। ये गांव की चौपाल पर अलाव के सहारे चिलम के दौर के साथ रात-रात भर चलती रहती हैं। इनमें सबसे पहले 'हुंकारा' देने वाला चुन लिया जाता है जो कहानी की हर टेक पर 'हूं' करता रहता है। 'हूं' याने उसकी बात सुनी और समझी जा रही है। फिर बीस बोला रानी की कहानी शुरू होती है। इसमें सबसे पहले दुनियां की अनुपम वस्तुओं से रानी की तुलना करते हुए कथानक आगे बढ़ता है। लाख कोशिश करने पर भी किसी कोतवाल या वरितक के लड़के को ही राजकुमारी मिलती है।

स्त्रियों द्वारा कही जाने वाली वार्ताओं में व्रत की वार्ताएं प्रसिद्ध रही हैं। ये वार्ताएं व्रत, त्यौहारों के दिन उपवास, पूजा के बाद पारिवारिक समृद्धि की कामना लेकर आगे बढ़ती हैं। ऐसा कोई प्रश्न नहीं जिसकी वार्ता न हो। जैसे गणेश चतुर्थी आई तो गणपति चौथ की वार्ता, ऋषि पंचमी आई तो ऋषि पंचमी की वार्ता।

वाचिक परम्परा में तीसरा स्थान लोक-कहावतों और पहेलियों का है। लोक-कहावतों को यदि सामाजिक न्याय की चलती-फिरती अदालतें कहें तो भी अत्युक्ति नहीं होगी। किसी बड़े से बड़े विवाद का कम से कम समय और शब्दों में अचूक निर्णय देने की इनमें अद्‌भुत क्षमता होती है। दलीलें और उपदेश भी जहां हार जाते हैं, वहां कहावतें अपना रंग जमाती आई हैं। ये शिलाओं पर अंकित राज-आज्ञाएं नहीं हैं पर ओंठ पर चलते हुए शताब्दियों के ओर-छोर नापती आई हैं। ये विचारों के ऐसे तिनके हैं जो डूबते को उभारने का सहारा देते हैं। ज्ञान के ऐसे सिक्के हैं जो सब देशों और सब कालों में समान रूप से चलते आये हैं।

ये अनुभव की पुतलियां हैं। इसलिए कहावतों के सम्बन्ध में कहा गया है कि कहावत कभी झूठ नहीं बोलती। एक कहावत के बोल हैं- 'हुंकार वात न तुकार लड़ई बढ़ज।' अर्थात् 'हूं' कहने से बात और तू-तू, मैं-मैं करने से लड़ाई बढ़ती है।

इसी प्रकार दूसरी है- 'फाट्या ख सिवणु न रूठ्या ख मनावणु।' अर्थात् फटे हुए वस्त्र को सीना और रूठे हुए मनुष्य को मनाना चाहिये।

पहेलियां मानव-बुद्धि को परखने को कसौटी हैं। निमाड़ी में इन्हें ताड़नई वार्ता याने बूझने वाली पहेलियां कहा गया है। सांझ पड़े कुछ लड़के घिर कर बैठ जाते हैं। उनमें से एक पूछता है- अच्छा मेरी वार्ता तोड़ोगे।

असो कसो पांवणो मांय
घर मैं सूतो अंगणा पांव।

अर्थात् 'हे मां! यह कैसा मेहमान है जो सोता तो घर में है पर उसके पैर आंगन तक फैले हैं।' सुनते ही सब स्तब्ध रह जाते हैं। किसी को कोई उत्तर नहीं सूझता। तब उन्हें 'खूटी' कहना होता है। खूटी अर्थात् मेरी बुद्धि समाप्त हो गई। तब वार्ताकार खूटी याने तुम्हारी अकल फूटी कहकर पहेली का अर्थ बताता है- 'अरे यह तो दीया है। इसे रखते तो घर में हैं पर इसका उजाला आंगन तक फैला होता है।'

तब दूसरी वार्ता चलती है-

'तूव चल हऊं आयो।' याने तुम चलो मैं आता हूं। और अनेकों लड़के बोल उठते हैं- 'अरे यह तो दरवाजा है। एक के बिन दूसरे का काम नहीं चलता।'

वाचिक परम्परा में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान सन्त साहित्य का है। इसमें 16वीं शताब्दी के कबीर के समकालीन बृह्नगीर, मनरंगीर, सिंगाजी, खेमदास, दलुदास और रंकदास के निमाड़ी भजन हैं। कहते हैं सिंगाजी के ग्यारह सौ भजन आज भी वाचिक परम्परा के माध्यम से झांझ और मृदंग के सहारे गांव-गांव में गूंजते आये हैं।

देवउठनी एकादशी, 25 नवम्बर को पूरे देश में तुलसां-सालिगराम का विवाह रचाया गया। उदयपुर की कृष्णपुरा बस्ती में गंगानगर की श्रीमती तुलसी स्वामी ने इस बार कोरोना के चलते यह उत्सव विशेष सादगी से सम्पन्न किया और सर्वजन के कल्याण एवं सुखी स्वास्थ्य की कामना की।

50 निर्धनों को कम्बलें वितरित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। दीन दु:खी, दिव्यांगों की सेवा में निरंतर कटिबद्ध नारायण सेवा संस्थान ने सर्दी की दस्तक के साथ ही गरीबों को ऊनी कपड़े और कम्बलें वितरित करने की सेवा शुरू कर दी है। संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल ने बताया कि टीम ने आमदरी ग्राम में कोरोना प्रोटोकॉल का ध्यान रखते हुए आर्थिक रूप से गरीब-असक्षम 50 लोगों को कम्बलें वितरित की।

देश बचाने के लिए मोदी ही काफी है

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने डॉ. मनमोहनसिंह की अध्यक्षता में तीन कमेटियां बना दी हैं, जिनका काम पार्टी की अर्थ, सुरक्षा और विदेश नीतियों का निर्माण करना है। इन कमेटियों में वे कुछ वरिष्ठ कांग्रेसी भी हैं, जिन्होंने कांग्रेस की दुर्दशा सुधारने के लिए पत्र लिखा था। इस कदम से यह अंदाज तो लगता है कि जिन 23 नेताओं ने सोनियाजी को टेढ़ी चिट्ठी भेजी थी, उनसे वह भयंकर रूप से नाराज़ नहीं हुईं।

ये बात और है कि उस चिट्ठी का जवाब उन्होंने उनको अभी तक नहीं भेजा है। उनकी इस कोशिश की तारीफ करनी पड़ेगी कि उन्होंने कोई ऐसे संकेत नहीं उछाले, जिससे पार्टी में टूट-फूट के आसार मजबूत हो जाएं लेकिन यह समझ में नहीं आता कि उक्त तीनों मुद्दों पर पार्टी के बुजुर्ग नेताओं से इतनी कसरत करवाने का उद्देश्य क्या है? मानों उन्होंने कोई दस्तावेज तैयार कर दिया तो भी उसकी कीमत क्या है? पार्टी में क्या किसी नेता की आवाज में इतना दम है कि राष्ट्र उसकी बात पर कान देगा? उसकी बात पर ध्यान देना तो बहुत दूर की बात है। **सारा प्रचारतंत्र जानता है कि कांग्रेस का मालिक कौन है? मां, बेटा और अब बेटी। बाकी सबकी हैसियत तो नौकर-चाकर कांग्रेस (एन.सी.-नेशनल कांग्रेस) की है।**

जो कांग्रेस आज अधमरी हो चुकी है, पहले उसे जिंदा करने की कोशिश होनी चाहिए या देश को बचाने की? देश बचाने के लिए अभी तो नरेंद्र मोदी ही काफी हैं। यदि कांग्रेस मजबूत होती और संसद में उसके लगभग 200 सदस्य होते तो वह एक वैकल्पिक सरकार बना सकती थी। वैकल्पिक छाया-सरकार के नाते उसके सुझाव में थोड़ा दम भी होता लेकिन अब जो पहल हो रही है, वह हवा में लाठी घुमाने-जैसी है। कांग्रेस के सामने अभी उसके अस्तित्व का संकट मुंह फाड़े खड़ा हुआ है और वह वैकल्पिक नीतियां बनाने में लगी रहेगी।

इस समय ये तीन कमेटियां बनाने की बजाय उसे सिर्फ एक कमेटी बनानी चाहिए था और उसका सिर्फ एक मुद्दा होना चाहिए था कि कांग्रेस में कैसे जान फूंकी जाए? इस समय कांग्रेस का दम घुट रहा है। यदि उसे ताजा नेतृत्व की हवा नहीं मिली तो हमारा लोकतंत्र कोरोनाग्रस्त हो सकता है। सक्षम विपक्ष के बिना कोई भी लोकतंत्र स्वस्थ नहीं रह सकता।

पुस्तकों से बेहतर कोई विकल्प नहीं : चतुर्वेदी

नईदिल्ली। 'डिजिटल माध्यम के इस दौर में जबकि हर व्यक्ति अपने हिसाब से किसी भी बात को कह सकता है, हमारे आसपास अनावश्यक एवं झूठी सूचनाएं इकट्ठी हो गई हैं।

ऐसे में प्रिंट माध्यम एक बेहतर विकल्प के रूप में हमारे सामने आता है और इस दृष्टि से पुस्तक अभी भी हमारे लिए ज्ञान का महत्त्वपूर्ण स्रोत है।' हिंदू कॉलेज के हिंदी विभाग द्वारा राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर आयोजित वेबिनार में 'राष्ट्रीय पुस्तक न्यास' के हिंदी संपादक पंकज चतुर्वेदी ने कहा कि यद्यपि लेखन का इतिहास बहुत पुराना है परंतु किताबें आमजन के लिए बहुत बाद में सुलभ हो सकीं। शुरुआत में विभाग प्रभारी डॉ. पल्लव ने 'हिंदी साहित्य सभा' की गतिविधियों की जानकारी दी। **-डॉ. पल्लव**

गीतकार ताराप्रकाश जोशी नहीं रहे

जयपुर। एकबार नन्द चतुर्वेदी ने ताराप्रकाश जोशीजी से पूछा-'तारा बाबू! तुम तो हाकिम कवि हो। साहित्य में तुम्हारा क्या अवदान है?' डॉ. जोशी ने उत्तर दिया- 'नन्द बाबू! साहित्य में अवदान का फैसला समय करता है। मेरे गीत तो जन-जन के कण्ठों में तीस-चालीस वर्षों से बिराजित हैं। मैं गीतकार के रूप में जाना-पहचाना जाता हूं पर नन्द बाबू तुमको तो प्रतीक्षा करनी होगी।' यह सुन नन्द बाबू अवाक् रह गए।

डॉ. जोशी ने अपने गीतों में शोषित, पीड़ित और दलित वर्ग की पीड़ा को मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति दी है। अल्प वेतनभोगी सरकारी कर्मचारियों की व्यथा-कथा का यथार्थवादी चित्रण किया है। वे कहते हैं- 'मेरा वेतन ऐसे जैसे गरम तवे पर पानी।'

25 जनवरी 1933 को जन्मे डॉ. जोशी ने सभी साहित्यिक विधाओं में अपने को अभिव्यक्त किया है। उनकी प्रथम कृति 'कल्पना के स्वर' और अन्तिम कृति 'प्रत्यूष की पदचाप' है। उन्होंने 'जयनाथ' नामक उपन्यास तथा 'द्वापर के आंसू' नाटक भी लिखा। राजस्थानी में 'दूधा' भी एक विलक्षण कृति सिद्ध हुई। शासन-प्रशासन द्वारा भी उनकी सराहना की गई।

डॉ. जोशी के अनुसार एक रससिक्त रचना गहन आत्मनलय और छन्दों के पंखों पर आरूढ़ होकर दिल से होती हुई कागज पर उतरती है। ऐसी रचना ह्रदय के मध्य जन्म लेती है और जिसे शाश्वत तथा सनातन के दिव्य रूप में विचारशील मन द्वारा सार्थक शब्दों में पिरोई जाती है।

राजस्थान साहित्य अकादमी ने अपने सर्वोच्च मनीषी सम्मान से उन्हें अलंकृत किया। 08 अक्टूबर 2020 को लम्बी बीमारी की पीड़ा भोगते वे हम सबको अलविदा कह गये।

- श्रीकृष्ण शर्मा

जैनरत्न रतनलाल सी. बाफना का निधन

जलगाँव। विख्यात समाजसेवी व धर्मनिष्ठ श्रावक रतनलाल सी. बाफना (85) का 16 नवंबर 2020 को जलगाँव में देहांत हो गया। उन्होंने अपने जीवन में मानवसेवा, गोसेवा, जीवदया, शाकाहार और स्वाध्याय-प्रचार के प्रचुर कार्य किये। शाकाहार, प्राणिरक्षा और गोसेवा के

उल्लेखनीय कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए 1991 में उन्होंने 'आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड' का प्रवर्तन किया। उन्होंने 'गोसेवा अनुसंधान केन्द्र' की स्थापना भी की जो 'अहिंसा तीर्थ' के नाम से विख्यात है। बाफनाजी के जीवन पर साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने एक पुस्तक लिखी, जो 'प्रगति का पथिक' नाम से 2019 में प्रकाशित हुई। उत्कृष्ट कार्यों के लिए बाफनाजी को भगवान महावीर, जमनालाल बजाज तथा अटल बिहारी वाजपेयी के हाथों 'जैन रत्न' अलंकरण जैसे दर्जनों सम्मान मिले। सच ही है, ऐसी विभूतियां यदाकदा ही जन्म लेती हैं।

- डॉ. दिलीप धींग

तेरापंथ धर्मसंघ के सुश्रावक पोखरना का देवलोक गमन

कानोड़। कानोड़ निवासी तेरापंथ धर्मसंघ के जानेमाने सुश्रावक सवाईलाल पोखरना का 16 नवम्बर को निधन हो गया। पिछले करीब एक वर्ष से वे अपने स्वास्थ्य को लेकर ठण्डेमण्डे ही चल रहे थे।

उन्हें तेरापंथ के तीन-तीन आचार्य; तुलसी, महाप्रज्ञ एवं वर्तमान आचार्य महाश्रमण का आशीर्वाद प्राप्त रहा। धर्मसंघ की विविध कार्यप्रणालियों तथा गतिविधियों में उनका अखिल भारतीय योगदान रहा। अनेक स्थायी महत्त्व के कार्यों में लम्बे समय तक उनकी सेवाएं स्मरणीय रहेंगी।

अपने निजी व्यवसाय तथा पारिवारिक हित-चिन्तन से भी अधिक वे शासन-सेवा के लिए समर्पित रहे। आचार्य तुलसी के अमृत जयंती प्रसंग की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये

रखने हेतु अपने जन्म स्थान कानोड़ में तुलसी अमृत शिक्षण संस्थान की स्थापना में अग्रिम भूमिका निभाई। इसके लिए पर्याप्त आर्थिक सहयोग प्राप्त किया और आदर्श शिक्षण की व्यवस्था की। इस दृष्टि से उन्होंने पूरे भारत में अपनी गहरी पैठ और पहचान बनाई। जरूरतमन्द बाइयों तथा व्यक्तियों को सहयोग तथा सम्पोषण देने में वे सदैव आगे रहे।

उनके निधन पर डॉ. देव कोठारी, माधव दरक, डॉ. दिलीप धींग, लक्ष्मणसिंह कर्णावट, डॉ. महेन्द्र भानावत ने अपनी शोकाभिव्यक्ति में कहा कि पोखरनाजी जैसे व्यक्ति बार-बार जन्म नहीं लेते। डॉ. तुक्तक ने बताया कि शब्द रंजन कार्यालय में वे अपने उदयपुर प्रवास में कई बार आये और फोन पर भी यदाकदा कुशलक्षेम पूछते रहे। अपने मृदुल व्यवहार से वे सबमें लोकप्रिय थे। **-डॉ. देव कोठारी**

राजस्थानी कवि 'जौहरी' अलविदा

कानोड़। कानोड़ निवासी राजस्थानी भाषा, संस्कृति के मंजे हुए कवि जयसिंह चौहान 'जौहरी' लंबे समय से अस्वस्थ रहने पर 25 नवंबर को विदा हो गए। वे मुख्यत: दोहा रचनाकार थे। दोहे भी बड़े टकसाली लिखते थे। उन्होंने बहुत अधिक नहीं लिखा पर उत्तम लिखा।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि आकाशवाणी केन्द्र द्वारा वे समय-समय पर प्रसारण देते रहे। कानोड़ में जब भी हिंदी, राजस्थानी अकादमी तथा आकाशवाणी द्वारा काव्यगोष्ठी आयोजित की गई, जौहरी का काव्यपाठ सराहा गया। वे सदैव मेरे संपर्क में रहे और अपनी नव रचनाएं भेजते रहे। पत्र-पत्रिकाओं में उनका प्रकाशन हुआ। उनकी कुछ लघु पुस्तिकाएं भी छपीं। प्रो. देवकर्णसिंह, डॉ. देव कोठारी, डॉ. जे. के. ओझा ने कहा कि किसी समय साहित्य सिरमौर रहा कानोड़ अब उतना ही शून्याकाशी हो गया है। **-दिनेश कुदाल**

विधायक माहेश्वरी का निधन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोविड-19 से संक्रमित राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी (59) का 29 नवंबर रात 12.30 बजे मेदांता

हॉस्पिटल में निधन हो गया। उनके शव को विमान से उदयपुर लाया गया जहां कोविड-19 प्रोटोकॉल के तहत अंतिम संस्कार किया गया।

उल्लेखनीय है कि वे उदयपुर की सांसद, उदयपुर नगर परिषद की पहली महिला सभापति रहीं। वसुंधरा सरकार में कैबिनेट मंत्री से लेकर भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष रहीं। मूलत: उदयपुर निवासी श्रीमती माहेश्वरी राजसमंद की विधायक थीं। वे कोटा उत्तर नगर निगम की प्रभारी थी और कोटा चुनाव के दौरान ही कोविड पॉजिटिव हो गई थीं। उनके निधन से भाजपा में शोक की लहर छा गई।

स्मृतियों के शिखर (112) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अपने कर्मशील पुरुषार्थ से कीर्तिकलश कोरनेवाले कांकरियाजी

आज जब कांकरिया साहब पर मेरी कलम कुछ कहने चली है तो भाई साहब का यह कथन एक चित्रपट की तरह मुझे प्रदर्शित हुआ लग रहा है- ''अधिकांश लोग आकृति में मनुष्य होते हैं पर उनकी प्रकृति में मानवीय गुणों का अवतरण नहीं हो पाता। ऐसे मनुष्य बहुत बिरले हैं जो आकृति में भी मनुष्य की विराटता लिए हुए हों और प्रकृति में भी मानवीय गुणों की दिव्यता समेटे हुए हों। श्री सरदारमलजी कांकरिया ऐसे ही बिरले मनुष्यों में से हैं। यथा नाम तथा गुण के अनुसार उनमें नेतृत्व-गुण की क्षमता और संगठन-शक्ति की दृढ़ता सर्वोपरि रूप में है। विद्वानों के प्रति उनके मन में बड़ा आदर और स्नेह है। उनके साथ विचार-विमर्श करने में उन्हें गहरे आनन्द की अनुभूति होती है और वे घण्टों समाज और राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं पर उन्मुक्त चर्चा करते हैं। अपनी बेलाग टिप्पणी भी देते हैं। अपने विचारों में वे गतानुगतिकता के प्रति तीव्र आक्रोश और रूढ़ मान्यताओं के प्रति विद्रोह का भाव भी व्यक्त करते हैं। वे समाज की व्यवस्था और धार्मिक परम्परा में कुछ रचनात्मक परिवर्तन चाहते हैं जो मानवीय संवेदनाओं को जगा सके और अपने सरोकारों को वर्ण, जाति, मजहब और सम्प्रदाय से ऊपर समग्र मानवता से जोड़ सके।'' - डॉ. नरेन्द्र भानावत

राजस्थान के नागौर जिले के गोगोलाव गांव में 28 जनवरी 1929 को जन्मे श्री सरदारमलजी कांकरिया का बहुगुणा व्यक्तित्व एवं कृतित्व किसी सांचे विशेष में मण्डित नहीं किया जा सकता। उनके सम्पर्क में जो भी आया वह सदैव के लिए उनका कायल होगया।

अपनी लघु वय में ही 1945 में उन्होंने कलकत्ता को अपना व्यावसायिक सेवा-स्थल बनाकर जूट, ऊन, फिल्म वितरण, रसायन उद्योग, भवन निर्माण के साथ-साथ शिक्षा, साहित्य, चिकित्सा, धर्म, संस्कृति जैसे अनेक क्षेत्रों में अद्‌भुत योग दिया। उसके कारण वे सबके बीच सम्मान्य, स्नेहिल, सौम्य एवं सकारात्मक संवेदनशील सहिष्णु बने हुए हैं।

ऐसे सहजमना कांकरियाजी लगने को साधारण व्यक्ति लगते हैं किन्तु वे सर्वथा असाधारण और सामान्य होते हुए भी असामान्य एवं अति विशिष्ट ही हैं। पहली बार मेरे अग्रज आदरजोग डॉ. नरेन्द्र भानावतजी ने ही मेरी सन् 1979 की किसी विद्वत् गोष्ठी में मेरी उनसे भेंट कराई तब से वे मेरे प्रति भी उतने ही आत्मीयता हेतालु बने हुए हैं। उसके बाद यदा-कदा कभी किसी धार्मिक आयोजन में और कभी उनसे उदयपुर में मेरा मिलना होता रहा।

कलकत्ता में भारतीय भाषा परिषद् द्वारा जब मुझे डॉ. प्रभाकर माचवे ने राजस्थानी लोकगीतों में व्यक्त जनचेतना की वैश्विक अवधारणा पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया तब भूपराजजी जैन ने मुझे कांकरियाजी के साथ-साथ उनके द्वारा स्थापित जैन कॉलेज भी दिखाया और कहा कि किस प्रकार कांकरियाजी ने संकल्पबद्ध एक करोड़ की राशि का संग्रह कर भव्य बिल्डिंग निर्मित कराई।

दूसरी बार भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान की एक संगोष्ठी के पश्चात तो वे मुझे अपने निवास पर भी ले गए जहां अति आत्मीयतापूर्ण आतिथ्य सत्कार की स्मृति अब भी ताजा है और तीसरी बार तो 16 दिसम्बर 2018 को उन्होंने अपने द्वारा स्थापित विचार मंच द्वारा 51 हजार का राजस्थान के प्रख्यात महाकवि की स्मृति का 'कन्हैयालाल सेठिया पुरस्कार' देकर ही मुझे यशोमण्डित कर जो गौरव प्रदान किया उससे वह समारोह मेरे जीवन की शिलपट्टी पर स्थाई रूप से उत्कीर्ण हो गया।

कांकरियाजी स्वभाव से बड़े शांत पर विचारों से धर्मक्रान्त हैं। परम्परा के श्रेष्ठत्व को सामयिकता की कसौटी देने वाले समताधारी हैं। कुबेर हैं पर किसी से बैर नहीं है। कांकर की तरह कर्मठ होकर अपने चहुंओर स्नेह, सहृदयता और शिष्टाचार की धार लिए हैं।

कांकरियाजी ने अपने व्यवसाय को परिष्कृत रुचि और सामाजिक स्टेटस देने मैं अपनी प्रामाणिक ओलखाण बनाई है। फिल्मों के फाइनेंसर रहे तो काजल, वक्त और लव इन टोकियो जैसी फिल्में दीं और डिस्ट्रीब्यूटर का कार्य हाथ में लिया तो कयामत से कयामत तक की रजत जयंती मनीं। कलकत्ता में कभी ओरियन्टल सिनेमा उनकी लोकरंजक रुचि की बेहतरीन पहचान था।

कोलकाता में डॉ. भानावत-कांकरियाजी

प्रारंभ में ऊन के व्यवसाय में उनका सिक्का खूब खनखनाया। भारत जनरल टेक्सटाइल्स तथा बंगाल पोलीमर कम्पनियों के माध्यम से उन्होंने बड़ी ख्याति अर्जित की। कंस्ट्रक्शन का कार्य हाथ में लिया तो हावड़ा में बनी नौ बिल्डिंग सबका आकर्षण बनी।

उनके द्वारा स्थापित जैन विद्यालय बड़ा आदर्श शिक्षा संस्थान है। वहां शिक्षकों का बड़ा मान है। सरकार से अधिक सेलेरी दी जाती है। अनुदान नहीं और परिणाम सर्वश्रेष्ठ देने वाला ऐसा संस्थान अन्यत्र बिरला ही मिलेगा।

धर्म, अध्यात्म, साहित्य, संस्कृति, कला, इतिहास, पुरातत्व आदि का कोई क्षेत्र हो, कांकरियाजी का एक बड़ा मन निरन्तर अपनी प्यास बुझाता मिलेगा। साधु-सन्तों का सान्निध्य और विद्वानों का सम्मान उनकी संजीवनी है। कलाकारों, साहित्यकारों, संस्कृतिविज्ञों के साथ मिल-बैठ बातचीत करने, उन्हें अपना आवास देने और कलकत्ता दर्शन कराने में उन्हें आत्मीय सुख की अनुभूति होती है। सभी प्रकार का सु-साहित्य पढ़ने और संवार कर रखने में उनकी दिलचस्पी बड़ी अनोखी और बेजोड़ है।

अच्छे कार्य करने वाले व्यक्तियों और संगठनों के प्रति कांकरियाजी बड़े उदार और हितेषी हैं। प्रसिद्ध चित्रकार इन्द्र दुग्गड़ की स्मृति में एक कोष स्थापित कर उनकी स्मृति में प्रतिवर्ष एक चित्रकार को सम्मानित किया जाता है। इन्द्र दुग्गड़ से मेरी कभी भेंट नहीं हुई किन्तु धर्मयुग में मेरी रचनाओं के साथ उनके चित्रों ने मुझे बड़ी ख्याति दिलाई।

उदयपुर में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में जैन दर्शन विभाग, कलकत्ता में सम्यक ज्ञान मन्दिर, प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार, गोगोलाव में आयुर्वेदिक औषधालय तथा नागौर में उच्च माध्यमिक विद्यालय की स्थापना उनके अन्य स्थाई कार्य हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी वे सबसे निस्पृह हैं। वे किंग नहीं हैं पर किंगडम उनका है। एक सफल किंगमेकर के रूप में उनकी भूमिका सर्वत्र सराही जाती है। कांकरियाजी ने अनेक संस्थाओं, छात्रों, विधवाओं और जरूरतमंदों की अर्थ सहयोगी सेवा की मगर सबमें चुप मौन रहते कभी भामाशाही पदवी का संबोधन नहीं लिया। सपत्नी देश-विदेश का भ्रमण तथा पदयात्राओं में भी उन्होंने बड़े उत्साह से भाग लिया। वॉलीबॉल, बैडमिंटन तथा क्रिकेट के साथ-साथ वे आज भी प्रतिदिन एक घंटा तैरकर तरी का अनुभव करते हैं।

इस उम्र में भी धर्मजीवी बनते हुए स्वस्थ-मस्त करने का ईश्वरीय वरदान ही उनकी सम्पदा है। बिखरी हुई शक्तियों को संगठित करने, वित्तीय आधार को सम्बल प्रदान करने तथा हर समस्या का समाधान करने की कला कोई कांकरियाजी से सीखे। ऐसे सूझबूझ के धनी मनीषी अपने कर्मशील पुरुषार्थ से पग-पग कीर्ति-कलश कोरने वाले कांकरियाजी हम सबके बीच ऐसे जलजीवी कमल-पुष्प बने हुए हैं जिस पर जल भी अपना दाग नहीं छोड़ पाता है।

कांकरियाजी ने अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ की संस्थापना में नींव के पत्थर बन उसे पल्लवित-पुष्पित करने में सूत्रधार की भूमिका निभाई। गौरव उन्हीं को छूता है, जिनको तनिक भी गर्वगुमान नहीं छू गया होता है। **उनसे मिलकर मैंने पाया कि एक ऐसा व्यक्ति जो सरदार नहीं होते भी असरदार होता है, वह जहां भी होता है, सरदारमल कांकरिया ही होता है।**

एमवे ने बाल दिवस मनाया

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एमवे इंडिया ने लगातार 12वें वर्ष बाल दिवस मनाया। एमवे इंडिया के सीएसआर कार्यक्रम 'प्रोजेक्ट सनराइज' के हिस्से के रूप में 12 एनजीओ भागीदारों के साथ पूरे भारत में वर्चुअली आयोजित किए गए।

एमवे इंडिया के सीनियर वाइस प्रेजिडेंट नॉर्थ एवं साउथ गुरशरण चीमा ने कहा कि जन कला साहित्य मंच के सहयोग से एमवे ने बच्चों को दीया पेंटिंग, पॉट पेंटिंग, थम्ब पेंटिंग और मिट्टी की कला से संबंधित कई गतिविधियों में वर्चुअली भाग लेने और बाल दिवस का जी भरकर लुत्फ लेने के लिए प्रोत्साहित किया। समापन सभी प्रतिभागियों के लिए रोमांचक उपहारों के साथ हुआ। जन कला साहित्य मंच, जयपुर के सचिव कमल किशोर, ने कहा कि हमारा उद्देश्य बच्चों को कुछ समय देना और उन्हें साथियों एवं शिक्षकों के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करना था। इस तरह की गतिविधियों से बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करने और उन्हें व्यस्त रखने में मदद मिलती है। यह समय की जरूरत है। हमें पिछले कई वर्षों से अपने बच्चों के लिए एमवे इंडिया से निरंतर सहयोग मिला है।

वेदांता देश की टॉप सस्टेनेबल कंपनियों में शामिल

उदयपुर (विज्ञप्ति)। वेदांता समूह ने पर्यावरण, सामाजिक और गवर्नेंस (ईएसजी) के मानदंडों के अनुरूप प्रदर्शन में महत्वपूर्ण सुधार करते हुए धातु एवं खनन क्षेत्र में डाऊ जोंस सस्टेनिबिलिटी सूचकांक (डीजेएसआई) रैंकिंग में वर्ष 2020 में 12वां स्थान हासिल किया है। कंपनी की यह सस्टेनिबिलिटी रैंकिंग सतत सुधार की दिशा में तीन वर्षों के ट्रेंड को दिखाती है। परसेंटाइल के मानक पर यह सुधार 86 फीसदी है जबकि वर्ष 2019 में यह 70 और वर्ष 2018 में 60 फीसदी था। इस वर्ष वेदांता समूह ने एशिया पेसिफिक क्षेत्र में धातु एवं खनन श्रेणी में दूसरा स्थान हासिल किया है जबकि पिछले वर्ष कंपनी सातवें स्थान पर थी। यह उपलब्धि सस्टेनिबिलिटी के मानदंडों के आधार पर व्यवसाय प्रचालन के प्रति वेदांता की कटिबद्धता का द्योतक है। समूह की कंपनी हिंदुस्तान ज़िंक ने एशिया पैसिफिक क्षेत्र में सस्टेनिबिलिटी में टॉप किया है जबकि डीजेएसआई रैंकिंग में यह आठवें स्थान पर रही।

वेदांता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने कहा है कि समूह शून्य क्षति, शून्य अपशिष्ट एवं शून्य उत्सर्जन की नीति के प्रति दृढ़ कटिबद्ध है। कॉरपोरेट गवर्नेंस के उच्च मानदंडों के अनुरूप समूह अपने प्रचालन तथा स्टेकहोल्डरों के लिए मूल्यसंवर्धन की दिशा में प्रदर्शन जारी रखेगा। वेदांता न सिर्फ स्वयं के लिए बल्कि अपने प्रचालन क्षेत्र के समुदायों, क्षेत्रों, देशों और उद्योगों में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए बेहतरीन स्थिति में है।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 दिसंबर 2020

सम्पादकीय

हिन्दी पुस्तकों का छपन-पठन और पाठक

आज का पाठक पुस्तक विमुख हो गया है। पुस्तकें जैसे निर्वासित और एकाकी हो गई हैं। पुस्तकें कई रूपों में सजीव होती हैं। अन्तर है तो यही कि वे अपनी मुक्ति के लिए कोई पहल नहीं कर सकतीं। जहां पुस्तकें हैं भी वे अलमारी की शोभा बनी हुई हैं ताकि सम्बन्धित व्यक्ति-लोगों की निगाहों में बड़ा विद्वान लगे।

जैनेन्द्रजी के उपन्यास में दर्शाक रंजना से कहता है- ''मेरे यहां भी किताबें हैं पर मैं उन्हें पढ़ता नहीं हूं। उनको रखने का शौक ही ठीक है। पढ़ना तो बिगाड़ दिया करता है। मैं जो बना वह पुस्तक पढ़कर नहीं बना बल्कि ए वन स्मगलर बनकर बना।'' कहा जाता है कि मुलायमसिंह यादव ने भी पुस्तकों पर कर और उपकर लगाकर जनता को पुस्तकों से दूर रखने का जैसे अभियान ही छेड़ दिया था।

इसे क्या कहें कि जब देश में निरक्षरता की अधिक व्याप्ति थी तब पुस्तकें पढ़ने का बोलबाला था लेकिन धीरे-धीरे स्थिति उल्टी होती गई। वह समय था जब शरतचन्द्र के उपन्यास सर्वाधिक पढ़े जाते थे। देवकीनन्दन खत्री को पढ़ने के लिए कई लोगों ने हिन्दी सीखी। गुलशन नन्दा का नाम चला तो प्रकाशकों ने लेखकों से उनकी पाण्डुलिपियां खरीद लीं पर शर्त रखी कि उन्हें गुलशन नन्दा के नाम से छापी जाएंगी। नागार्जुन भी खूब चले।

कवियों में भवानीप्रसाद मिश्र का 'गीत बेचता हूं' खूब सुना गया। गोपालप्रसाद व्यास की 'पत्नी को परमेश्वर मानो' हास्य रचना की धूम रही। काका हाथरसी तो हास्यरसी ही कहलाने लगे। नीरज, बालकवि बैरागी कवि सम्मेलनों के समा बांधक थे। लगभग सभी विधाओं के लेखकों की तूती बोलती थी पर उसके बाद पटाक्षेप हुआ तो ऐसा कि हिन्दी साहित्य का न वैसा छपन-पठन रहा और न वैसे पाठक-श्रोता ही।

प्रसिद्ध कथाकार डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर की राय में उपन्यास लेखन में उस समय आज जैसा विकास नहीं हुआ था। अनुसंधान का अभाव था। जीवनीपरक उपन्यास भी नहीं थे। निबन्ध का विकास तो अब रूक ही गया। महादेवी के ललित निबन्ध काव्य विधा के समानान्तर थे जो बड़े चर्चित रहे। ऐसे ही नाटक अब मात्र मंचन करने के लिए लिखे जाते हैं। पहले पठन के लिए भी होते थे। प्रसाद के नाटक खूब पढ़े गये। तब उनका आधार कथात्मकता लिए बड़ा मजेदार था।

उनकी दृष्टि में काव्य की स्थिति भी बड़ी उलट गई। छन्द लय विहीन काव्य वैचारिक प्रधानता लिए हो गया। वह पद्य की बजाय गद्य हो गया। अब कहां खण्डकाव्य, महाकाव्य लिखे जा रहे हैं ? उनकी दृष्टि में और भी कारण हैं। साहित्य का भी काफी विस्तार हो गया। आलोचना अब नीर-क्षीर वाली नहीं रही बल्कि ठकुर सुहाती हो गई।

पुस्तक लोकार्पण पर लेखक-प्रकाशक ऐसी ही आलोचना लिखवा कर प्रशंसित होते हैं। उनकी पहचान बनाने के लिए नाना जतन किये जाते हैं। टेलीविजन, कम्प्यूटर, गूगल जैसी सुविधाओं से भी बड़ा फर्क पड़ा है। ऐसे में प्रकाशक का ध्यान मात्र सरकारी खरीद वाला साहित्य छापने का रहता है।

अब तो लेखक स्वयं प्रकाशक भी बन गया है। अपने पैसे द्वारा वह अपनी पुस्तक छपवाकर अपनी पहचान देते दिख रहा है। ऐसे में लेखकों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है पर लेखन वैसा गुणात्मक और प्रभावी नहीं रहा। खोजने पर और भी कारण उभर आयेंगे। कुल मिलाकर यह विषय लम्बी चर्चा का भी है। पुरस्कारों की मूल्यहीनता पर भी अलग से चर्चा करने जैसा प्रसंग नजर आ रहा है। ऐसे में गम्भीर लेखक भी कम नजर आते हैं तो वैसा लेखन भी नहीं पढ़ने को मिल रहा है। ऐसी स्थिति में जब लेखन नहीं तो पठन की उम्मीद भी बेमानी ही लगती है।

पीछे छूटते दीवाली के बालगीत

दीवाली का त्यौहार बालकों के लिए सर्वथा भिन्न तरह का रहा। पुराने लोग याद करते कहते हैं कि बालगोपाल सप्ताह पूर्व ही घर-घर दीवाली की रोशनी, रौनक और रंगोल्लास की सूचना देने सुबह-शाम संध्या-रात्रि निकल पड़ते।

एक हीड़, बड़ा दीया घुमाते तेल, पैसा इकट्ठा करते। ये बच्चे दो-तीन की टोली में भी फेरी देते। कड़ावे जोड़ते अपनी काव्य-कल्पना का जोश दिखाते। गाते- 'हीड़ हींचो, तेल घालो, पया मेलो, आई दीवाली, पछै खेंकरो।'

एक अन्य टोली नृत्यमय अदा करती गाती- 'गाड़ा हेटे चमला बाया, उगा छोटा-मोटा जी। बड़ा घरां का बापजी म्हांनै बड़ा करां परणावोजी। छोटा घरां रा ताकड़ी तोला, सेर सोनो तोलांजी। सेर सोना री आयल पायल, रूपा रा झांझरियाजी। ओढ़ प्हैर ने पाणी चाल्या, राणाजी बखाणी जी। रावजी का घुड़ला छूटा, ठमके पायल फूटी जी। लाधी वै तो दीजो देवर, म्हूं थाणी भोजाई जी। झमन्यो देवर पीसै पोवै, जेठ भरेगा पाणी जी। सासूजी तो रोट्यां पोवै म्हूं घर की ठकराणी जी।'

लड़कियों की ऐसी कल्पना उनके बालमन में भावी जीवन को देखने की ऊंचाई नापती सुखद लगती है। सब कोई चाहती है कि उनका जीवन उनकी मन की उमंग तथा विचारणा की आदर्श पायदान पर स्थित उत्तुंग बने।

इन गीतों में लड़कियों की तुलना में लड़कों की सोच सर्वथा भिन्न लगती है। उनकी कल्पना कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा बनती कहीं की कहीं पहुंचती है और नये-नये संदर्भ बनाती लगती है। कुछ स्थल तो अर्थवान नहीं लगते भी मनभावन लगते हैं। जैसे-

'चाइलो माइलो चड़ी रायलो रे टिकड्यो हडुमान। लंका लंका घेर जाजे रे देवता रा असवार। आंबो बदग्यो भाई लांबो रे डाल गी गुजरात। केर्यां लागी भाई झूमको रे खाग्यो बदरीनाथ। बदरीनाथ रा कोट कांगरा रे चितोड्यो कुमार। चीतो आयो सांकड़े रे नार घूडूका ले जंडा चाइला री लोड़ी।

खेताखेड़े वणो वायो रे मनकी नींदवा जाय। म्हारो बेटो ऊंदरो रे दानगी चुकाना जाय। म्हूं तो राबड़ी पीवा निकल्यो रे टेगड़े पकड़ी टांग। या ले थारी राबड़ी रे छोड़दे म्हारी टांग। हाथी पड्यो-पड्यो मूते रे तपेलो भराय। जंडी चाइला री लोड़ी।'

एक गीत तो और मजेदार है। यह घड़ल्या का गीत है। घड़ल्या मिट्टी का बना छेदवाला छोटा सा कलशा होता है जिसमें दीपक जलता रोशनी से झिलमिलाता है। गीत में यह एक बालक का प्रतीक है। कल्पना बड़ी ही सुंदर तथा भावप्रद है।

'घड़ल्यो म्हारो लाड़लो सैर में भाग्यो जा रे भाई। सैर में भागो कांटो नाई रे घरे जा रे भाई। नाई दीधी लीसणी मोची रे घर जारे भाई। मोची दीधा पान फूल माली रे घरे जा रे भाई। माली दीधां फूलड़ा देव चड़ावा जारे भाई।

घड़ल्यो म्हारो लाड़लो मंगरी दौड्यो जारे भाई। मंगरी दीधी लात री सात घडिन्दा खा रे भाई। सात पली खातेड़ी ने रात रातां पाया ओ राज। लूंगा री ताकड़ी ने फलाणा लालजी री वऊ ने कूटी ओ राज। कूटी तो थोड़ी ने गेंची घणी डेरी में डचोकी ओ राज। ई लो थारा छोरा-छोरी म्हूं म्हारे पीयर जासी ओ राज। गाम पटेलां भाइला म्हारी गोरी ने जातां देखी ओ राज। देखी थी भाई देखी थी बड़ला री खोखल बैठी थी।'

इसी प्रकार एक दूसरा गीत-

'एरे ए चरकली तू मंदर में कई करती ए। घड़ल्यो घड़ल्यो पाणी भरती वाट बुवारा करती ए। करे तो करवा दीजो अबके सावण लावांगा। आकड़ा री डाल्यां हेटे ढूल्या रमती देखी ए।'

एक अन्य गीत-

मामा रे जाऊं ए मांय घी खीचड़ी खाऊं ए मांय। मामे घड़ल्यो रमझम रेंटियो ए मांय।

-डॉ. तुक्तक भानावत

पीलिया एवं खून की कमी के साथ जन्मे नवजातों का गीतांजली में सफल उपचार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल की नवजात शिशु इकाई में चिकित्सकों ने पीलिया एवं खून की कमी के साथ जन्मे जुड़वा नवजातों का कुछ ही घंटे में सफल इलाज कर उन्हें नया जीवनदान दिया है। नवजात शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. ब्रजेश झा, डॉ. महिमा अग्रवाल, डॉ. पार्थ मिलन प्रसाद, नर्सिंग स्टाफ व रेजिडेंट डॉक्टर्स ने मिलकर इलाज को सफल बनाया।

नवजातों के पिता ने बताया कि उनकी पत्नी की डिलीवरी जालौर में हुई। डिलीवरी के बाद एक बच्चे को पीलिया और दूसरे में खून की कमी थी। ऐसे में डॉक्टर की सलाह पर दोनों नवजातों को गीतांजली हॉस्पिटल उदयपुर में लेकर आए। डॉ. ब्रजेश झा ने बताया कि एक बच्चे का जन्म के 28 घंटे पश्चात पीलिया का लेवल 28 एम.जी/ डी.एल तक पहुँच गया जिसका इलाज खून बदलकर किया जाना आवश्यक था। चार घंटे के भीतर नवजात का खून बदल दिया। इसके बाद पीलिया का लेवल 19 एम.जी/ डी.एल आ गया परन्तु नवजात में पीलिया का असर बाकी रहने से फिर से खून को बदला गया। फिर पीलिया का लेवल 9.5 एम.जी/ डी.एल पर आ पंहुचा जो फिर नही बढ़ा।

दूसरे बच्चे में भर्ती के समय खून की कमी थी। हिमोग्लोबिन का लेवल 10.4 एम.जी/ डी.एल था। ऐसे में बच्चे के खून चढ़ाया गया। दोनों बच्चे स्वस्थ हैं, माँ का दूध पी रहे हैं तथा इनका वजन भी बढ़ रहा है।

राजस्थान विद्यापीठ तथा आईसीएसआई में एमओयू

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डिम्ड टू बी विश्वविद्यालय एवं आईसीएसआई के बीच हुए एमओयू पर कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, सीएस के अध्यक्ष आशीष गर्ग, चेयरमैन सुरेश पाण्डे, उदयपुर चेप्टर के सीएस मोहित भाणावत, नागेन्द्र डी. राव, निदेशक अनिता शुक्ला, रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच ने हस्ताक्षर किए।

प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि एमओयू से छात्रों एवं शिक्षकों के लिए नए अकादमिक अवसरों का सृजन होगा। आशीष गर्ग ने कहा कि अकादमिक सहयोग का उद्देश्य आईसीएसआई और विभिन्न विश्वविद्यालयों और राष्ट्रीय संस्थाओं के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान करना और छात्र-छात्राओं, शिक्षाविद्रों और पेशेवरों के कौशल को बढ़ावा देना है। संस्थान देशभर में अब तक 53 शैक्षणिक संस्थाओं के साथ एमओयू कर चुका है और उदयपुर में विद्यापीठ विश्वविद्यालय पहला विश्वविद्यालय है जिसके साथ एमओयू हुआ है। इस मौके पर रोनक झुटावत, महिपालसिंह सोलंकी, डॉ. हीना खां, डॉ. निरू राठौड़, डॉ. निशा चौहान, डॉ. विवेक शर्मा, डॉ. विनीत जैन, डॉ. दिनेश श्रीमाली, डॉ. तरूण श्रीमाली तथा मोहित वानावत उपस्थित थे।

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (2)

- देवीलाल सामर -

मूलतः भीण्डर के सामरजी ने काशी से बी. एससी कर उदयपुर के विद्याभवन में इक्कीस वर्ष अध्यापन किया। उनका प्रारम्भिक जीवन पितृ विहीन मुसीबतें झेलते मामा के लालन-पालन में बीता फिर सन् 1952 में भारतीय लोककला मण्डल की स्थापना कर विश्वख्याति तक का अथक सफर तय किया। उनकी षष्टिपूर्ति जयंती पर डॉ. महेन्द्र भानावत ने एक भव्य समारोह पर 'गेहरो फूल गुलाब रो' नाम से उनकी जीवनी प्रकाशित की।

अपने प्रदर्शन दल के साथ सामरजी पहली बार कलकत्ता पहुंचे तब उन्हें घोर पराजय मिली पर उसमें भी वे आशा की संजीवनी ही तलाशते रहे। 'मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा' की प्रथम किश्त में इसका बड़ा ही रोचक वर्णन पढ़कर कलकत्ता निवासी प्रवासी राजस्थानी साहित्यचेता रतन शाह ने फोन पर बताया कि वह प्रदर्शन उन्होंने भी देखा और सारी स्मृतियां ताजी हो गईं। उसके बाद तो सामरजी को कई बार कलकत्ता बुलाया गया। यहां सामरजी ने पर्याप्त यश और अर्थ दोनों प्राप्त कर पूरे विश्व में राजस्थान का नाम सिरमौर किया।

रामनिवास बाग के संग्रहालय के सामने वाला विशाल चबूतरा इस नाटिका के प्रदर्शन के लिए उपयुक्त समझा गया। भव्य रंगमंच तैयार हुआ। अत्यंत आकर्षक सजावट हुई तथा लगभग बीस हजार दर्शकों के बैठने का प्रबन्ध किया गया।

जयपुर में आशातीत सफलता :

उस समारोह के अध्यक्ष थे श्री जगजीवनरामजी। प्रदर्शन देखकर दर्शक समुदाय धन्य हुआ। प्रदर्शनोपरान्त श्रीयुत्त व्यासजी लपक कर रंगमंच पर आये और मुझे गले लगा कर हजारों दर्शकों के सामने मुझे कंधों पर उठा लिया। वह बड़ा मार्मिक प्रसंग था। श्री जगजीवनरामजी भी बड़े प्रभावित हुए और सबके सम्मुख उन्होंने मेरा सम्मान किया।

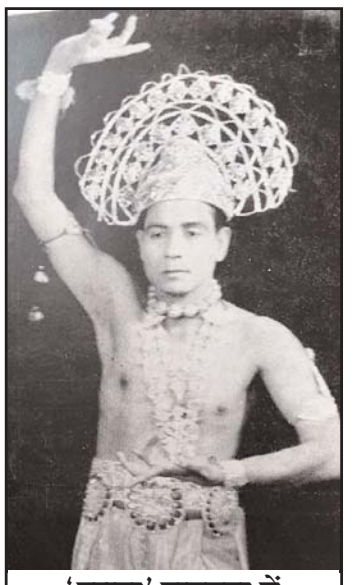

'तराना' नृत्यमुद्रा में सामरजी (1952)

30 मार्च का यह प्रदर्शन भारतीय लोककला मण्डल के लिए एक लेण्डमार्क था। उसकी शौहरत समस्त देश में फैली, मध्यप्रदेश में भी क्योंकि चम्बल वहां बंधने वाली थी। अत: चम्बल बांध के लिए धन संग्रह होते भी इस चम्बल नाटिका के प्रदर्शन आयोजित किये गए। यह खबर स्वयं पंडित नेहरू तक पहुंची और जब तक उन्होंने भी यह नाटिका नहीं देखी तब तक चैन नहीं लिया। उन्होंने तत्सम्बन्धी समस्त खबर प्राप्त करके मुझे आशीर्वाद दिया।

मुख्यमंत्री द्वारा भाग्योदय :

चम्बल नाटिका के प्रदर्शन के बाद मुझमें एक विचित्र प्रकार का आत्मविश्वास जागा और मुझे यह भी भान होने लगा कि अब संस्था का भाग्योदय निश्चित है। मैं धीरे-धीरे श्रद्धेय व्यासजी के निकट आता गया। वे भलीप्रकार जानते थे कि संस्था भारी कष्ट में है और उनके सहयोग की आकांक्षी है।

वे यह भी जानते थे कि भारतीय लोककला मण्डल ही एकमात्र संस्था है जिस पर राजस्थानी लोक संस्कृति के उत्थान की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है।

कई बार उन्होंने मुख्यमंत्री के निजी फण्ड में से हमें आर्थिक सहायता प्रदान की। उनकी इस सहायता से हमने 1954 में एक सैकण्ड हेंड बस भी खरीद ली।

मेरे विशेष आग्रह पर वे एकबार चम्बल के एक भव्य प्रदर्शन के उद्घाटन के लिए उदयपुर भी आये। उनके कारण तत्कालीन महाराणा साहब भी चम्बल के प्रदर्शन में दिलचस्पी लेने लगे। व्यासजी बहुधा मुझे तथा मेरे लड़के गोविन्द को अपने दौरों में साथ ले जाते जहां मुझे अनायास ही राजस्थानी कला और संस्कृति के सहज दर्शन हो जाते थे। अपने मुख्यमंत्री पद के कार्यकाल में उन्होंने मुझे और मेरे स्वर्गीय पुत्र गोविन्द को प्राय: समस्त राजस्थान की सैर करादी। यह केवल सैर मात्र ही नहीं थी, जीवन का विपुल अनुभव था। व्यासजी जहां उम्र में परिपक्व थे वहां वे बालक की चपलता और युवक का उत्साह रखते थे। हार कर बैठ जाना या थकना तो वे सीखे ही नहीं थे। अपने दौरे में वे जहां हर तपके के अनगणित लोगों से मिलते वहां वे यह भी नहीं भूलते कि उनके साथ ऐसे कलाविज्ञ भी हैं जो राजस्थान की कलात्मक झांकियां भी देखना चाहते हैं और उनकी कला का अध्ययन भी करना चाहते हैं। अत: दिन में राजकाज की बातें किया करते थे और रातें हमारे लिए उन्होंने छोड़ दीं।

राजस्थानी लोकरंगों का आत्मावलोकन :

कभी-कभी डाक बंगलों, सर्किट हाउस तथा कहीं कहीं गांवों की चौपालें कलात्मक कार्यक्रमों से रातभर सराबौर रहतीं। गाने-बजाने वाले नाच में नाटक करने वालों की भीड़ लग जाती। हम रात-रात रेकार्डिंग करते। उनकी विधाओं का अध्ययन करते। फोटो फिल्म खींचते और व्यासजी के कला-व्याख्यानों का आनन्द लेते।

इन्हीं दौरों के दौरान हमने डीडवाने की तेरातालियां देखलीं। जालोर के ढोलनृत्य वालों की गम्मतें निहार लीं। जैसलमरी लंगों के गीतों का रसास्वादन कर लिया। बीकानेरी रम्मतों, जोधपुरी डांडियों एवं शेखावाटी गींदड़ों एवं कच्छीघोड़ियों का भरपूर मजा ले लिया। इसी दौरान हमने कुचामणी लोकनाट्यों, चिड़ावी ख्यालों एवं धोलपुरी नौटंकियों के बारे में भी अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली।

प्रजास्थान का कलामान :

यह वह जमाना था जब राजा-महाराजाओं का राज खतम ही हुआ था और लोकतंत्री शासन की शुरूआत हुई थी। उस समय राजाओं से पूरी तरह नाता टूटा भी नहीं था क्योंकि उनमें से जयपुर वाले राजा राजस्थान के प्रमुख थे और उदयपुर के महाराणा महाराज प्रमुख। जो रूतबा आज राज्यपालों का है वही इन राज प्रमुखों का था।

उन्हें बड़े-बड़े प्रीवी पार्सल मिलते थे। उनकी शान शौकत के कई निशान बाकी रह गये थे। जहां तक प्रजा का प्रश्न था वे अभी तक भी उसके प्रति वफादारी दिखाते थे। जिन कलाकारों से हमारा सम्पर्क हुआ था वे तो अभी तक भी उनके गुण गाने में पीछे नहीं रहते थे। मजे की बात यह है कि ये लोककलाकार भी बड़े-बड़े शास्त्रीय कलाकारों की तरह अपनी आजीविका के लिए छोटे-छोटे ठाकुरों एवं जागीरदारों के साथ चिपके हुए थे।

कलाकारों के गीतों में सामन्तों को खुश करने की बातें छिपी हुई थीं। श्रृंगारित गीतों में ठाकुर-ठकराओं के वैभव विलास और ठाठबाट के वर्णन थे। मुख्यमंत्री का दौरा सुनकर तो कलाकार उनके निवास स्थल पर बुलाये-बिन-बुलाये आते-जाते थे परन्तु उन्हें तब भी यह पता नहीं था कि प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि होते थे।

वे इन्हें भी सम्पूर्ण राजस्थान के राजा ही मानते थे। मुझे मालूम है कि जब भी व्यासजी अपने अमले के साथ किसी गांव में जाते तो लोग उन्हें समस्त राजस्थान का राजा ही मानकर सड़कों, गलियों एवं अटारियों पर चढ़कर पुरातन राजशाही तरीके से अभिवादन करते थे। कहीं-कहीं तो गांव के ढोली, मिरासी, शहनाई नवाज, नफीरी बजाने वाले डाक बंगले के बाहर अपना-अपना पारम्परिक वादन किया करते थे।

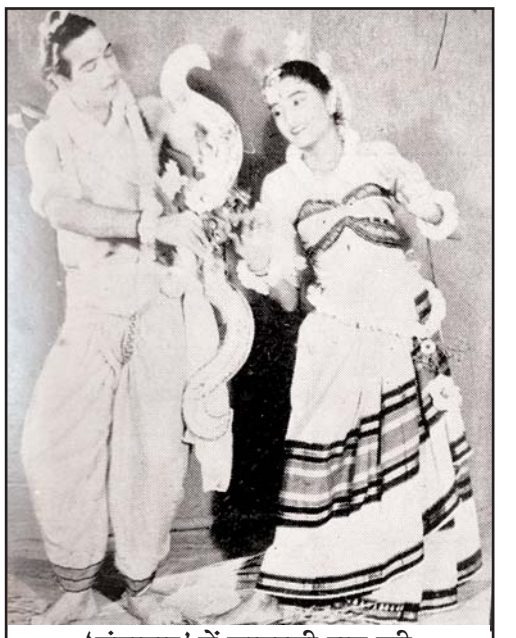

'गंगापार' में सामरजी राम की भूमिका में (1955)

कलागुणी व्यासजी के सरोकार :

कई बार तो व्यासजी को उनके इस तरह के व्यवहार पर नाराजगी भी प्रकट करनी पड़ती थी। वे बहुधा इसीलिए गांव में प्रवेश करते समय किसी प्रकार के वाहन एवं आडम्बर का इस्तेमाल नहीं करते थे।

एक बात का व्यासजी बहुत ख्याल रखते थे कि ये कलाकार कहीं प्रबंधकों द्वारा बेगार पर नहीं बुलाये गये हों। उनको खिलाने-पिलाने आवश्यक पारिश्रमिक एवं इज्जत देने में वे कभी पीछे नहीं रहते। उनको इस बात का भी बड़ा ख्याल था कि इस तरह के इनामात राजकोष से न दिये जाय।

वे अधिकांश इस तरह की सुविधा अपने निजी खर्च से ही करते। मुझे मालूम है कि हम जब भी जयपुर जाते व्यासजी का हम पर यह स्थायी आदेश था कि हम उन्हीं के बंगले में ठहरें, खावें तथा सभी पारिवारिक सहुलियतों का लाभ उठावें। मुझे यह भी ज्ञात है कि उनका रसोड़ा अमर रसोड़ा बन गया था।

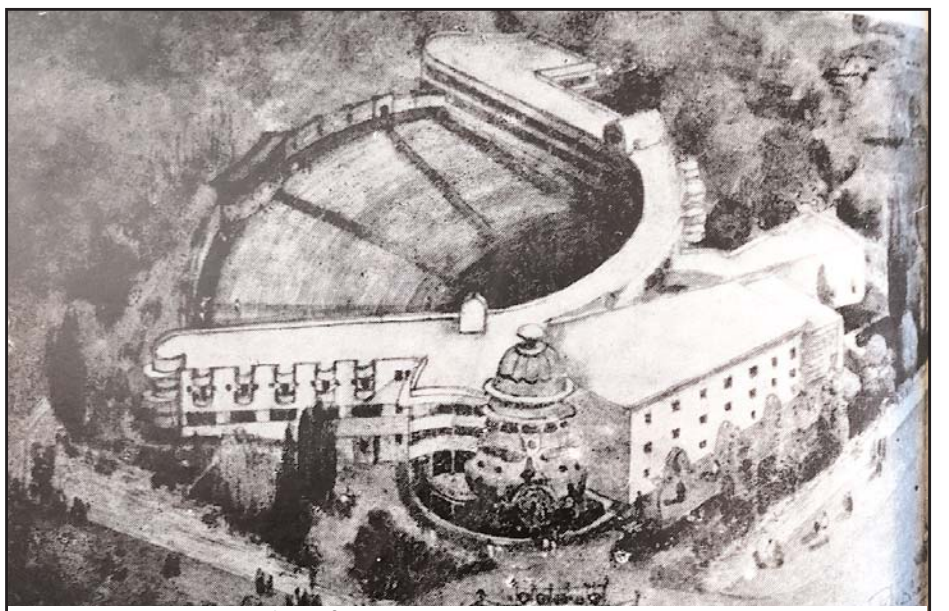

भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर (1965)

-क्रमशः

ज्ञान को आलोकित करने एसबीआई ने दिया 8 लाख का सहयोग

उदयपुर (विज्ञप्ति)। गुलाबबाग स्थित नवलखा महल में पर्यावरण संरक्षण के मद्देनजर ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सोलर पैनल लगाने के लिए स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) ने अपने सीएसआर फंड से 8 लाख रूपए का सहयोग प्रदान किया है। यह सोलर पैनल यहां बन रहे श्री डी थियेटर एवं संस्कार वीथिका भी आलोकित करेंगे ।

सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य ने बताया कि पर्यावरण सुरक्षा आज वैश्विक चिन्ता का विषय है। सब कुछ सरकार के भरोसे न छोड़कर इसे वैश्विक जन-आन्दोलन बनाने से ही पर्यावरण संरक्षण करना संभव होगा। न्यास इसी दिशा में सतत प्रयासरत है। पर्यावरण के हित में पूरे परिसर में ग्रीन एनर्जी का उपयोग हो यह भी प्रमुख लक्ष्य है। ऐसे में भारत की सर्वप्रमुख बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने अपने सीएसआर कार्यक्रम के तहत इस उद्देश्य के लिए सोलर पैनल लगाने के लिए न्यास को आठ लाख रुपये की धनराशि प्रदान की है।

स्टेट बैंक इंडिया, उदयपुर के सहायक उप महाप्रबन्धक अमरेन्द्रकुमार सुमन ने बताया कि नवलखा महल में जन सामान्य और विशेष रूप से विद्यार्थियों में मानव मूल्यों की स्थापना के लिए अनेक प्रकल्पों का सृजन किया गया है जिसमें आर्यावर्त चित्रदीर्घा वेदों के अविर्भाव से लेकर अद्यतन भारतीय संस्कृति का चित्रण सफलतापूर्वक कर रही है। उसी में श्री डी थियेटर एवं संस्कार वीथिका भी है जहां पर महापुरूषों के जीवन प्रसंगों से प्रेरणा मिल सकेगी।

उल्लेखनीय है कि नगर विधायक गुलाबचन्द कटारिया की ओर से विधायक निधि से परिसर के बीच के खुले चौक को डोम से आच्छादित किया गया है और न्यास के प्रमुख न्यासियों के सहयोग से इसको अत्यन्त सुन्दर बनाया जा रहा है। स्मार्ट सिटी परियोजना उदयपुर द्वारा लगभग 46 लाख रुपये की राशि से इस हैरिटेज भवन को सुरक्षित एवं आकर्षक बनाने के लिए कार्य प्रगति पर है। कार्यक्रम में मुख्य प्रबंधक पवनकुमार सिंघी, डॉ. ए. एल. तापड़िया, सुधाकर पीयूष, कार्यालय मंत्री भंवरलाल गर्ग, जनसंपर्क सचिव विनोद राठौड़ सहित न्यास के अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

स्टैंड-अप इंडिया में उद्यमियों का अच्छा रुझान

उदयपुर (विज्ञप्ति)। भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) द्वारा वित्तीय सेवा विभाग, वित्त मंत्रालय के मार्गदर्शन में स्टैंड-अप इंडिया के अग्रणी राष्ट्रीय मिशन के अंतर्गत स्थापित किए गए स्टैंडअप मित्र पोर्टल से 30 सितंबर, 2020 तक 21,000 करोड़ रुपए के 96,000 से अधिक ऋण मंजूर किए जा चुके हैं।

सिडबी के उप प्रबंध निदेशक वी. सत्य वेंकट राव ने कहा कि भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं को डिजिटल पहुँच पर विशेष जोर के साथ कार्यान्वित कर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाने का काम सिडबी के प्रमुख प्रकार्यों में से एक रहा है। लगभग एक लाख उम्मीदवारों ने स्टैंड-अप इंडिया के तहत अपने नए उद्यम स्थापित करने का विकल्प चुना है। छूट गए ऐसे खानों/ खंडों को बढ़ावा देने और उनके सपनों को साकार करने के लिए। आकांक्षी उद्यमियों को इस योजना पर विचार करने हेतु आमंत्रित किया गया है। दलित इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (डीआईसीसीआई) के माध्यम से स्वावलंबन संकल्प का समर्थन करने जैसे कदम उठा रहे हैं, जो एससी / एसटी खंडों को मुख्यधारा में लाने के मिशन का प्रतिनिधित्व करता है।

स्पाइन सर्जरी कर मरीज को राहत दी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कई महिनों से कमर दर्द व साईटिका की समस्या से परेशान मदनलाल जाट को परिजनों ने कई अस्पतालों में दिखाया लेकिन उपचार से संतुष्टी नहीं मिली। गत दिनों मदनलाल को पारस जे. के. हॉस्पिटल के न्यूरो व स्पाईन सर्जन डॉ. अजीत सिंह को दिखाया।

डॉ. सिंह ने एमआरआई के बाद उपचार का एक मात्र विकल्प ऑपरेशन बताया। ऑपरेशन में होने वाली चीरफाड़ के कारण मरीज डर गया तो डॉ. अजीत ने मरीज को आधुनिक माइक्रोस्कोपिक तकनीक की जानकारी दी जिसमें इस प्रकार के ऑपरेशन को सफलतापूर्वक करके एक दिन में ही छुट्टी दे दी जाती है। इस पर मरीज ऑपरेशन के लिए तैयार हो गया। डॉ. अजीत सिंह ने मरीज के छोटा चीरा लगाकर ऑपरेशन किया। दो-तीन घंटे के बाद मरीज से चलना-फिरना शुरु करवा दिया और अगले दिन छुट्टी दे दी गई। अभी मरीज दर्द से मुक्त और स्वस्थ है। डॉ. अजीत सिंह ने बताया कि इस प्रकार की सर्जरी में छोटे चीरे से ऑपरेशन किया जाता है जिसमें बहुत कम ब्लड लॉस व एक दिन के हॉस्पिटल स्टे में मरीज का पूर्ण ईलाज हो जाता है।

इंदिरा आईवीएफ की पहली किलकारी नव्या दस साल की हुई

उदयपुर (विज्ञप्ति)। बाड़मेर ,राजस्थान का एक सुदूर इलाका है जहाँ से यातायात इतना भी सुगम नहीं कि कोई चौदह वर्षों तक जगह-जगह की खाक छान सकें लेकिन ऐसा करते थे हंसराज और रेखा सोनी। संतान पाने के लिए दिल्ली, अहमदाबाद, जयपुर, अजमेर सहित कई शहरों के चक्कर काटे। चौदह बरस नि:संतानता का वनवास काटने के बाद उन्हें कहीं से इंदिरा आईवीएफ के बारे में पता चला जिस पर वे इंदिरा आईवीएफ के उदयपुर सेंटर पर आएं। यहाँ आईवीएफ की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप इनकी बेटी नव्या आज अपना दसवां जन्मदिन मना रही है।

इंदिरा आईवीएफ के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने नव्या को जन्मदिन की बधाई एवं आशीर्वाद देते हुए कहा कि इंदिरा आईवीएफ की पहली किलकारी नव्या है। इसके जन्म ने आज से एक दशक पहले ही कई मिथकों को तोड़ दिया था। आज इसका यहाँ इंदिरा आईवीएफ में आकर सबके साथ जन्मदिन सेलिब्रेट करना भी एक बड़ी बात है और उन दस से पंद्रह प्रतिशत दम्पतियों के लिए भी एक सीख, एक उम्मीद है जो नि:संतानता से परेशान हैं। अभी नि:संतान दम्पतियों की सुविधा के लिए देशभर में इंदिरा आईवीएफ के 93 सेंटर्स कार्य कर रहे हैं।

इंदिरा आईवीएफ के सीईओ डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि जब नव्या के माता पिता यहां आएं उससे कुछ दिनों पहले ही हमने ऑस्ट्रेलिया से क्लोज वर्किंग चैम्बर मंगाया था जिसमें आईवीएफ प्रक्रिया के दौरान लैब में भ्रूण को वहीं तापमान और वातावरण मिलता है जो माँ के गर्भ में मिलता है। जिससे सक्सेस रेट बढ़ता है और ऐसा ही हुआ। नव्या इस सक्सेस का साक्षात् प्रमाण है। जैसे ही कुछ भी नया होता है हम उसे अडॉप्ट करने की कोशिश करते हैं। आज इन्हीं की बदौलत 65 हज़ार से ज्यादा घरों में किलकारियां गूंज रही हैं। नव्या जिसकी शुरुआत बनीं।

अपने जन्मदिन पर जब नव्या प्रिंसेस की तरह इंदिरा आईवीएफ के उदयपुर सेंटर में दाखिल हुई तो उनके सत्कार के लिए खुद इंदिरा आईवीएफ समूह के डायरेक्टर और एम्ब्रोलॉजिस्ट नितीज़ मुर्डिया अपने चैम्बर से बाहर आएं और उन्होंने नव्या के साथ सेल्फी ली। नव्या को लम्बी उम्र की दुआ देते हुए नितीज़ मुर्डिया ने कहा कि नव्या को देखकर अब हम सब यह कह सकते है कि हमारा देश बदल रहा है। हम जिन बातों से नज़रें चुराते थे आज उसके लिए वोकल हो रहे हैं। सेलिब्रेट कर रहे हैं। ये बात इतिहास में दर्ज़ होगी।

इस दौरान हंसराज और रेखा सोनी ने घोषणा की कि वे दूसरी संतान की सोच रहें हैं जिसके लिए फिर से इंदिरा आईवीएफ ही आएंगे क्योकि यहाँ की तकनीक, पारदर्शिता और टीम के व्यवहार ने उन्हें बहुत आकर्षित किया है।

15000 मशीन निर्माण का आंकड़ा पार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। निर्माण उपकरण और हैवी मशीनरी बनाने वाली अग्रणीय कंपनी- सैनी इंडिया ने भारत स्थित प्लांट से हाल ही में 15000 मशीन निर्माण का आंकड़ा पार किया है। कंपनी ने भारत व दक्षिण एशिया में 36 डीलरों और 150 से भी अधिक कस्टमर टच प्वाईंट के नेटवर्क का सफलतापूर्वक विस्तार किया है और बाजार में पहुंच एवं लोकप्रियता दोनों मानकों पर दबदबा बढ़ाया है।

सैनी इंडिया, साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर दीपक गर्ग ने कहा कि हम इस महत्वपूर्ण अवसर का जश्न मनाते हुये अत्यंत खुश हैं। 15000 मशीन का उत्पादन करना एक उल्लेखनीय उपलब्धि है जो स्थानीय निर्माण उपकरण बाजार के लिये हमारी प्रतिबद्धता और ग्राहकों के विश्वास पर खरे उतरने की पुष्टि करता है। यह हमारे विकास की क्षमता का प्रमाण है और हमें आगामी प्रोडक्ट रेंज में नई-नई तकनीकियां पेश करते रहने को प्रोत्साहित करता है।

पीआईएमएस में कोरोना जांच शुरू

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल, उमरड़ा में कोरोना महामारी के दौर में जन सरोकारों के तहत अत्याधुनिक कोरोना जांच लेबोरेट्री की स्थापना की गई है जिसमें सरकारी दरों पर कोरोना की त्वरित जांच की जाएगी।

चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि राजस्थान सरकार के निदेशक (जन स्वा.) चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की ओर से जारी आदेश में पीआईएमएस हॉस्पिटल उमरड़ा को कोविड-19 की जांच के लिए अधिकृत किया गया है। पीआईएमएस में कोरोना की जांच के लिए एनएबीएल द्वारा मान्यता प्राप्त लेबोरेट्री स्थापित की गई है जिसमें अत्याधुनिक मशीनों द्वारा कोरोना टेस्ट होगा। यही नहीं कोरोना जांच के परिणामों की सूचना भी सरकारी पोर्टल पर अपलोड की जाएगी। कोरोना जांच के दौरान भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमएआर) की ओर से जारी सभी दिशा निर्देशों का पालन किया जाएगा।

हिमालया ने पेश की माउथ डिज़ॉल्विंग टेबलेट्स की क्यू-डी रेंज

उदयपुर (विज्ञप्ति)। हिमालया ड्रग कंपनी ने क्यू-डी माउथ डिज़ॉल्विंग टेबलेट्स क्यू-डी इम्युनिटी और क्यू-डी क्रैंप्स की पेशकश की है। क्यू-डी इम्युनिटी टेबलेट फ्लू एवं जुकाम के आम लक्षण जैसे कि गला खराब, खांसी, छींक एवं बंद नाक में आराम देती हैं। अनिल एम. ज़ियांदानी, बिज़नेस डायरेक्टर, फार्मास्युटिकल डिवीज़न, हिमालया ड्रग कंपनी ने कहा कि यह टेबलेट इम्युनिटी को मजबूत करने में भी मदद करती है।

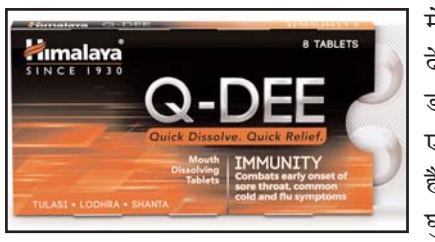

क्यू-डी क्रैंप्स महिलाओं में माहवारी के दौरान परेशानी को कम करती है और इसके चलते पेट में होने वाले दर्द में आराम देती है। हिमालया की क्यू-डी इम्युनिटी फॉर्मुलेशन का एक नया युग शुरू कर रही है। यह मुंह में 180 सेकंड में घुल जाती है, जिससे तेजी से असर शुरू होता है। क्यू-डी इम्युनिटी एवं क्यू-डी क्रैंप्स के आठ टेबलेट के पैक की कीमत 30 रूपये है और यह अग्रणी केमिस्ट, ऑनलाईन स्टोर्स पर उपलब्ध है।

कुंभ : मनुष्यता की जय-विजय के लिए किया जाने वाला स्नान

कुंभ के समय किया जाने वाला संगम स्नान मनुष्यता की अमरता को सुरक्षित रखने के लिए। व्यष्टि नहीं, समष्टि के लिए, निजता नहीं, समग्रता के लिए और जीवन नहीं, बल्कि जीवंत बने रहने के लिए किया जाने वाला स्नान है। कुंभ स्नान मनुष्यता की जय के लिए किया जाने वाला स्नान है। सब संगम में डुबकी लगा रहे हैं लेकिन शायद ही कोई ऐसा हो जो अपने लिए डुबकी लगा रहा हो। सब के सब अपने कुटुम्ब के लिए, समाज के लिए डुबकी लगा रहे हैं। अपनी निजता का विसर्जन कर रहे हैं जो वास्तव में मृत्यु का विसर्जन है। डुबकी लगाने से इन्हें तृप्ति नहीं मिलती। शायद अतृप्ति ही अमृत का दूसरा नाम है।

यह अमरत्व की कामना को अमर बनाये रखने का संकल्प पर्व है। अमर होने की कामना यदि सदैव जीवंत बनी रहे तो फिर देह की अमरता गौण हो जाती है और यह जीवंत कामना मनुष्यता की सदैव अद्भुत जिजीविषा से भरकर उसकी यात्रा को आगे बढ़ाती रहती है।

अमृत की बूंद के संगम पर, शिप्रा, गोदावरी और गंगा में अमृत घट से छलककर टपक पड़ने की कुल व्यंजना यही है कि उस मनुष्यता को मरने मत दो, जिससे यह कुंभरूपी ब्रह्मांड निर्मित हुआ है।

मानव भले ही देवताओं की तरह दैहिक रूप से अमर न हो लेकिन वह अमृत के सच्च भाव का संरक्षक और संवाहक है। कुंभ के समय किया जाने वाला संगम स्नान दैहिक अमरता के लिए किए जाने वाला स्नान नहीं है अपितु वह मनुष्यता की अमरता को सुरक्षित रखने के लिए।

व्यष्टि नहीं, समष्टि के लिए, निजता नहीं, समग्रता के लिए और जीवन नहीं, बल्कि जीवंत बने रहने के लिए किया जाने वाला स्नान है। इन अर्थों में मानव देवताओं को पराजित करता है। कुंभ स्नान मनुष्यता की जय के लिए किया जाने वाला स्नान है।

ज्योतिष गणना के अनुसार हरिद्वार में गंगा तट पर बृहस्पति के कुंभ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर कुंभ पर्व आयोजित किया जाता है जबकि प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर बृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने पर तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर कुंभ मनाया जाता है। नासिक में गोदावरी तट पर बृहस्पति तथा सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर तथा उज्जयिनी में बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर क्षिप्रा तट पर कुंभ पर्व मनाया जाता है।

प्रयाग तथा हरिद्वार में अर्द्धकुंभ मनाया जाता है। उज्जयिनी में मनाया जाने वाला कुंभ 'सिंहस्थ' के नाम से जाना जाता है जिसका प्राचीन उल्लेख ईसवी सन् 1754 की पाण्डुलिपि में है।

कुंभ में अखाड़ों का सर्वाधिक महत्त्व है। कुंभ में सर्वाधिक आकर्षण का केन्द्र नागा साधु होते हैं। कुंभ के समय इन नागा साधुओं की भाव-भंगिमाएं और करतब विशेष रूप से जनसमुदाय को आकृष्ट करते हैं। संन्यासियों की प्रतिभा का उपयोग करने के लिए आचार्य शंकराचार्य ने चार मठों की स्थापना की। कालान्तर में अनेक अखाड़े बने जिनके अपने निशान निर्धारित किए गए। ये अखाड़े शैव और वैष्णव सम्प्रदायों के अखाड़े हैं। मुख्य अखाड़े हैं- पंच दशनाम जूना अखाड़ा, श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी, तपोनिधि श्री निरंजनी अखाड़ा पंचायती, श्री पंचायती अटल अखाड़ा, तपोनिधि श्री पंचायती आनन्द अखाड़ा, श्री पंचदशनाम आह्वान अखाड़ा तथा श्री पंचाग्नि अखाड़ा।

शाही स्नान के समय क्रमानुसार विभिन्न अखाड़े स्नान करते हैं। कुंभ में शाही स्नान का बड़ा महत्त्व है। यह माना जाता है कि इन दिनों में स्नान करने पर विशेष पुण्य-लाभ होता है।

सब संगम में डुबकी लगा रहे हैं लेकिन शायद ही कोई ऐसा हो जो अपने लिए डुबकी लगा रहा हो। सब के सब अपने कुटुम्ब के लिए, समाज के लिए डुबकी लगा रहे हैं। अपनी निजता का विसर्जन कर रहे हैं जो वास्तव में मृत्यु का विसर्जन है। डुबकी लगाने से इन्हें तृप्ति नहीं मिलती। शायद अतृप्ति ही अमृत का दूसरा नाम है।

- नर्मदाप्रसाद उपाध्याय,
परछाई का सच से साभार

भारत का सबसे बड़ा ऑनलाइन जीके ओलिम्पयाड लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जीके शब्द का सामान्य बुद्धिमता से गहरा नाता है। यह जीवन में घटित होने वाली चीजों के महत्व के प्रति हमारी समझ को दर्शाता है। ओलिम्पयाड जैसे टेस्ट में हिस्सा लेने पर विद्यार्थी क्विज एवं पजल के माध्यम से सीखकर जीवन में अधिक निर्णायक तथा आत्मविश्वास से परिपूर्ण बन पाते हैं। प्रत्येक माता-पिता की यह इच्छा होती है कि उनके बच्चे चाहे जो भी करें, उसमें सफलता हासिल करें। माइंड वार्स उनकी इसी इच्छा को पूरा करने आया है। माइंड वार्स एक मल्टीप्लेटफॉर्म नॉलेज प्रोग्राम है, जिसे जी इंटरटेनमेन्ट इंटरप्राइजेज लि. ने प्रमोट किया है। यह भारत का सबसे बड़ा ऑनलाइन सामान्य ज्ञान ओलिम्पयाड 2020 है। इसका उद्देश्य बेहतर भविष्य के सृजन हेतु विद्यार्थियों की पहचान और उन्हें प्रोत्साहित करना है।

जी इंटरटेनमेन्ट इंटरप्राइजेज लि. के वरिष्ठ उपाध्यक्ष उमेशकुमार बंसल ने कहा यह जीके ओलिम्पयाड़ समग्र भारत के सभी शिक्षा बोर्ड के कक्षा 4 से 12 के विद्यार्थियों के लिए है। 20 मिनट की परीक्षा में प्रत्येक कक्षा के 5 विषयों में से सुसंगत एवं रोचक सम-सामायिकी प्रश्न शामिल होंगे। इसमें राष्ट्रीय चैम्पियन के रूप में सम्मान पाने और एक करोड़ रूपये का पुरस्कार पाने का अवसर भी रहेगा। ओलिम्पयाड की परीक्षाएं 5, 6, तथा 12 दिसम्बर 2020 को होगी।

निसान मैगनाइट की बुकिंग शुरू

उदयपुर (विज्ञप्ति)। निसान इंडिया ने नई निसान मैगनाइट एसयूपी की कीमत की घोषणा करने के साथ देशभर में सभी निसान डीलरशिप तथा अपनी बसाइट पर एसयूवी की देशव्यापी बुकिंग की सुविधा शुरू कर दी है। इस बिग, बोल्ड, ब्युटिफुल और आकर्षक एसयूवी को 31 दिसंबर तक खास आमंत्रण मूल्य 4,99,000 रुपये (एक्स-शोरूम) में खरीदा जा सकता है। निसान मोटर इंडिया के प्रेसीडेंट सिर्नन ओज़्कॉक ने कहा कि ऑल-न्यू निसान मैगनाइट ने भारत समेत वैश्विक बाज़ार में निसान की नैक्स्ट रणनीति के नए अध्याय की शुरुआत की है।

खाताबुक का 'पगारखाता ऐप' लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। खाताबुक ने नया कर्मचारी मैनेजमेंट प्लेटफार्म, पगारखाता ऐप लॉन्च किया है। एप्लिकेशन मासिक/प्रति घंटा वेतन, उपस्थिति/अवकाश, सैलरी स्लिप, सैलरी कैलकुलेशन, भुगतान इत्यादि जैसे कार्यबल से संबंधित कार्यों को डिजिटल रूप से प्रबंधित करने में मदद करता है। खाताबुकके सह-संस्थापक, और सीईओ, रवीश नरेश ने कहा कि पगारखाता ऐप 13 भाषाओं में उपलब्ध उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफेस से लैस है, जो भाषाई पृष्ठभूमि के कारोबार मालिकों के लिए परेशानी मुक्त पहुँच को सक्षम बनाता है।

एचएसआईएल की 'फोन उठाओ क्लास चलाओ' पहल शुरू

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचएसआईएल लि. ने 'फोन उठाओ क्लास चलाओ' पहल के शुभारंभ की घोषणा की है। एचएसआईएल लि. में स्ट्रैटेजी के वाइस प्रेसिडेन्ट शाश्वत सोमानी ने कहा कि यह पहल कोविड-19 महामारी के बीच स्कूलों में बच्चों की पढ़ाई, स्वच्छता और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिये है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत एचएसआईएल लि. स्कूलों को कमजोर तबके के वंचित बच्चों के लिये स्मार्टफोन दान करेगा, ताकि एक स्मार्टफोन लाइब्रेरी स्थापित की जा सके। इस पहल के लिये एचएसआईएल लि. को कई फोन विनिर्माताओं और माय एंकर (एम.ए) फाउंडेशन एनजीओ से सहयोग मिल रहा है। इस पहल को अब तक 5 लाख रूपये से ज्यादा की फंडिंग मिल चुकी है, ताकि स्टूडेन्ट्स को घर बैठे डिजिटल तरीके से पढ़ाने में स्कूलों की मदद की जा सके।

वर्कशॉप तथा चिकित्सा शिविर

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में न्यूरो व स्पाईन दिवस के उपलक्ष्य में संभाग के फिजियोथेरेपी चिकित्सकों के लिए एक दिवसीय

वर्कशॉप आयोजित की गई। न्यूरो व स्पाईन विशेषज्ञ डॉ. अजित सिंह ने उदयपुर व आसपास से आये फिजियोथेरेपी चिकित्सकों को न्यूरो व स्पाईन के मरीजों के उपचार व देखभाल की नवीनतम तकनीकों से अवगत कराया साथ ही वर्तमान समय में आ रही नई बीमारियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में संभाग के 40 से अधिक फिजियोथेरेपी चिकित्सकों ने भाग लिया। डायरेक्टर विश्वजीत कुमार ने बताया कि अस्पताल में उदयपुर व आसपास के मरीजों के लिए 5 दिसम्बर तक प्रात: 10 से 2 बजे तक विशाल चिकित्सा शिविर आयोजित किया जा रहा है जिसमें न्यूरो व स्पाईन परामर्श पर 50 प्रतिशत तथा अस्पताल की अन्य जांचों पर 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जायेगी।

रैपीपे फिटनेस का देशव्यापी ऑफर लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। सभी लोगों को बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं से जोड़ने की दिशा में किए जा रहे गहन प्रयासों के साथ, रैपीपे फिनटेक प्रा. लि. ने देशव्यापी ऑफ़र लॉन्च किया है, जिसके माध्यम से कंपनी द्वारा रैपीपे साथियों को एईपीएस सेवाओं पर अधिकतम कमीशन दिया जा रहा है। यह ऑफ़र मध्य जनवरी तक लागू रहेगा।

रैपीपे के सीईओ योगेन्द्र कश्यप ने कहा कि रैपीपे एईपीएस और यह व्यवस्था आधार-कार्ड से नकद निकासी सेवाओं को सुलभ बनाकर समाज के हर तबके के लोगों को सशक्त बनाती है। यह पेमेंट सिस्टम पूरी तरह सुरक्षित तथा उपयोगकर्ताओं के बेहद सुविधाजनक है, जो यह सुनिश्चित करती है कि रैपीपे साथियों के माध्यम से देश में कहीं भी और कभी भी पैसे निकाल सकते हैं। भुगतान कर सकते हैं तथा खाता विवरण डाउनलोड कर सकते हैं। रैपीपे एईपीएस न केवल बैंकिंग सेवाओं को ग्राहकों के लिए बेहद आसान बनाता है, बल्कि यह एजेंटों को बाकी फिनटेक कंपनियों के मुकाबले सबसे ज्यादा कमीशन भी देता है। मौजूदा कोविड-19 की इस घड़ी में, रैपीपे अपने साथियों को अधिकतम कमीशन प्रदान करते हुए उनकी सहायता करना चाहता है, क्योंकि इसके माध्यम से उन्हें सामान्य की तुलना में 12 गुना अधिक कमाई करने का मौका मिलेगा। उम्मीद है कि इस योजना के जरिए 1 करोड़ से अधिक एईपीएस ट्रांजैक्शन किए जाएंगे, जिसका मतलब यह है कि 1 करोड़ से ज्यादा ग्राहक पारंपरिक एटीएम या बैंक शाखा गए बिना ही बड़ी आसानी से नगर पैसे निकाल पाएंगे।

पीआईएमएस में वर्ल्ड एड्स दिवस मनाया

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) हॉस्पिटल उमरड़ा में एचआईवी संक्रमण के प्रति लोगो को जागरूक करने के लिए वर्ल्ड एड्स दिवस मनाया गया। चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने

बताया कि वर्ल्ड एड्स डे मनाने का उद्देश्य एचआईवी संक्रमण की वजह से होने वाली महामारी एड्स, के बारे में हर उम्र के लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाना है। एड्स आज के आधुनिक समय की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है। वर्ष 2016 में पीआईएमएस में एड्स के उपचार के लिए पीपीपी मोड़ पर प्रदेश के प्रथम एआरटी सेंटर की स्थापना की गई थी। इस अवसर पर साई तिरुपति यूनिवर्सिटी के प्रेजिडेंट इंद्रजीत सिंघवी व प्रो. प्रेसिडेंट देवेंद्र जैन ने बताया कि पीआईएमएस हॉस्पिटल एड्स के नियंत्रण व उपचार के लिए प्रयासरत है। एड्स अभियान के तहत हॉस्पिटल संचार, रोकथाम और शिक्षा पर भरसक प्रयत्न कर रहा है।

गीतांजली हॉस्पिटल

के तत्वाधान में आयोजित

विशाल नि:शुल्क शल्य चिकित्सा शिविर

23 नवम्बर 2020 से 30 दिसम्बर 2020

प्रात: 9:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक

स्थान :

गीतांजली हॉस्पिटल, उदयपुर

नि:शुल्क परामर्श
भर्ती होने पर मिलने वाली सुविधाएँ

- नि:शुल्क भर्ती
- नि:शुल्क सामान्य जांचें
- नि:शुल्क ऑपरेशन
- नि:शुल्क दवाईयां
- CT Scan रियायती दरों पर उपलब्ध

नाक, कान व गला रोग

- कान के पर्दे में छेद का ऑपरेशन
- आँखों से लगातार आंसू आना एवं नासूर बनने का दूरबीन द्वारा इलाज।
- नाक, कान, गले की विभिन्न गांठे, थायराइड, टॉन्सिल एवं एडिनॉयड के ऑपरेशन।
- नाक की हड्डी का टेढ़ापन, पुराना जुकाम एवं अन्य बीमारियाँ, एलर्जी, माँस का बढ़ना आदि बिमारियों की आधुनिक दूरबीन द्वारा उपचार

जनरल सर्जरी

- पाईल्स
- हर्निया
- बवासीर
- फिस्टुला
- फिशर
- एपेन्डिक्स
- पित्ताशय की पथरी
- शरीर के किसी हिस्से में गांठ
- अन्य सभी प्रकार के सामान्य ऑपरेशन की सुविधा

नेत्र रोग

- नेत्र रोग सम्बन्धी परामर्श
- मोतियाबिन्द की जाँच
- नखूना व नासूर की जाँच
- कालामोतिया व आंखों के पर्दे की जाँच

बिना चीरे का ऑपरेशन | नेत्र की विभिन्न प्रकार की जांचें

शिविर से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

978 400 0127 | 707 388 8266 | 730 008 1578

गीतांजली मेंडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल

ने. हा.–8 बायपास, एकलिंगपुरा चौराहा के पास, उदयपुर (राज.)

0294–250 0014 | 250 0044

www.geetanjalihospital.co.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर – 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311–ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294–2429291, मोबाइल – 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।